शोध मंथन Vol. XIV No.II Apr.-June 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

वेद प्रकाश 'वटुक' जी के काव्य में सामाजिक चेतना

प्राप्तिः 24.05.2023
स्वीकृतः 25.06.2023

39

डॉ० स्नेहलता गुप्ता
हिन्दी विभाग
इस्माइल नेशनल महिला पी०जी० कॉलेज, मेरठ

बबली रानी
शोधार्थी
ईमेलः *bablirani225@gmail.com*

सारांश

डॉ0 वेद प्रकाश 'वटुक' भारत की उस पीढ़ी से सम्बन्धित व्यक्ति हैं, जिस पीढ़ी के लोग जीवन–मूल्यों, संस्कार और संस्कृति को अपने जीवन से भी अधिक बढ़कर महत्व देते थे। स्वभावतः भी डॉ0 वटुक जीवन–मूल्यों को महत्व देने वाले, अपने से बड़ों को सम्मान और छोटों को स्नेह देने वाले व्यक्ति हैं। अपने गांव, समाज और देश से उन्हें असीम प्रेम है। मानवता मात्र से उन्हें प्रेम हैं। उनके साहित्य से जितना हमने उन्हें जाना उससे वे एक ऐसे व्यक्ति प्रतीत होते हैं, जो खुले दिल से सबका स्वागत करते हैं, सबको अपनाते हैं, परन्तु अपनी भारत भूमि को भूलकर, उसका स्थान कभी भी किसी को भी देना स्वीकार नहीं करते।

वे इतने सरल और निश्छल हैं कि लोग बार–बार उनका लाभ उठाते हैं, उनको ध ोखा देते हैं, परन्तु वे प्रत्युत्तर में कभी भी किसी को हानि नहीं पहुंचाते उनकी रचनाओं में अनेक स्थानों पर वे वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन मूल्यों का पक्ष रखते हुए दिखाई देते हैं।

सामाजिक चेतना

डॉ0 वेद प्रकाश 'वटुक' के साहित्य में हमें सामाजिक चेतना की संपूर्ण क्रांति–सी दिखाई देती है। वे भारतीय समाज हो या पाश्चात्य समाज, उसके विषय में सदैव पूर्ण चैतन्य दिखाई पड़ते हैं, उसके विषय में सदैव लिखते रहे हैं। उन्होंने बचपन से ही भारतीय समाज, रीति–रिवाज और परम्परा आदि को न केवल देखा था, अपितु उसको जिया भी था। उन्होंने समाज के केवल अच्छे पक्षों को ही अपने साहित्य का अंग नहीं बनाया अपितु उसकी बुराईयों को भी उन्होंने उजागर किया ताकि सबका ध्यान उन बुराईयों की ओर आकर्षित करके उन बुराईयों को दूर किया जा सके–

''पाप करो, दान दो,
मुक्ति मिल जाएगी।
इस छोटे से, घिरे से
रेखा से, वृत से,
मन की संकुचितता के–
घर में घुसने पर ही।

हाँ–हाँ दोनों वक्त फिर
घूस देने आते हो,
घर में छोड़कर किसी
एक कंकाल को
एक दासी बनी आत्मा को।''

पाप करके, दान देकर उस पाप के बोझ से मुक्ति पा जाने की आकांक्षा रखने वाले भारतीय समाज पर 'वटुक' जी ने उक्त पंक्तियों में तीखा व्यंग्य किया है। भारतीय समाज में सबके कार्य निश्चित हैं, परंतु उन कार्यों में कितनी असमानता है। वह इन पंक्तियों से प्रकट होती है–

''वह जो
दिये की लौ में
पढ़ते हुए बाल अनुज पर
उडेलती थी प्यार का निर्झर
गर्व का साम्राज्य
मुँह अँधेरे उठकर
तैयार करती थी
पाठशाला जाते भाई के पराँठे
बाँधती थी नतने में
गुड़ और अचार''

समाज में, परिवार में भाई का काम था पढ़ना और बहन को पढ़ने–बढ़ने का अधिकार नहीं था, उसका कार्य होता था, पढ़ने वाले भाई की उचित देखभाल करना।

कभी–कभी बटुक जी को अनुभव होता है कि वास्तव में जिन लोगों पर समाज की रक्षा का दायित्व है, धर्म और न्याय का दायित्व है, वे ही समाज को सबसे अधिक हानि पहुंचाते हैं, उसे पतन की ओर ले जाते हैं। अपनी माँ से असीम प्रेम करने वाले डॉ0 बटुक ने एक बार उनकी सत्तरवीं वर्षगांठ पर उनके लिए एक कविता लिखते हुए इस समाजिक विडंबना पर भी प्रकाश डाला है–

''तुम दो माँ आशीश और मैं निज जीवन–सुख तुमको
तुम दो मुझको अभयदान, मैं मसलूं विशधर–फन को
जहरीले हैं नाग एक भी कण विष का है भीषण
दंशन की तो बात दूर फुंकार फूँक दे तत्क्षण
जी सकता है एक बार तो मानव काल जीतकर
इनका दंश किन्तु ऐसा है, बचे न क्षण भी नर
ये समाज के रक्षक नेता मुल्ला, पोप, पुजारी
धर्म–प्रचारक, नीति–प्रणेता, पुण्यात्मा, विचारी

हैं समाज के कोढ़, वर्ग–रंग–जाति–भेद के पोषक
इनकी गरल–अनल का कोई मिले न जग में तोषक
इनके विष–शर से आहत जो किया गया एकांकी
उसके जीवन में रहता है सत्त्व तत्त्व क्या बाकी।''

धर्म के ठेकेदारों ने वैसे सचमुच देखा जाए तो समाज का उपकार करने के स्थान पर अपकार ही अधिक किया है। भारतीय समाज जहां विभिन्न संप्रदायों के लोग बसते हैं, कहाँ तो अपने–अपने धर्म का शांति से पालन करते हुए लोग, मिल–जुलकर रह सकते थे, पर धर्मगुरुओं और धर्मांधों के कारण ही बार–बार समाज की शांति भंग हो जाती है। छोटी–छोटी बातों में मुस्लिम धर्मगुरु फतवा ज़ारी कर देते हैं, उनके लिए देश, देश का कानून, देश की शांति–व्यवस्था कोई मायने नहीं रखती। एक उदाहरण दृष्टव्य है–

''कल भी तुमने फ़तवा दिया था
आज भी तुमने फ़तवा दिया है
कल भी तुम फ़तवा दोगे
दूसरों को दफ़नाने की फ़िक्र में
पल–पल जीने वाले
ओ धर्मगुरु!
क्या तुम्हारे पास
ईश्वर के लिए भी है
(मानव की तो बात ही छोड़ दें हम
अस्तित्व क्या है उसका
तुम्हारी दृष्टि में)
कोई पल
आज या कल''

वटुक जी की यह नाराज़गी केवल मुस्लिम धर्मगुरुओं से नहीं है, वे उनके प्रति भी अपना रोश व्यक्त करते हैं, जो स्वयं को हिंदू धर्म के रक्षक बताते हुए समाज के वातावरण की शांति भंग कर देते हैं। धर्म की रक्षा के नाम पर अपनी मनमानी करने लगते हैं। अपना रोश प्रकट करते हुए वटुक जी कहते हैं–

''हिंदुत्व के नाम पर
मैंने देखी है
एक धर्मांध, ग़ज़नवी भीड़
जो माटी में मिला देती है
एक पूजाघर

हिंदुत्व के नाम पर
मैंने देखा है
अट्ठहास करता हुआ
एक आसुरी दल
जो जलसाधरों से बाहर निकलते
निहत्थे मासूमों का
कर रहा है खून''

डॉ0 वटुक की सामाजिक चेतना से समाज का कोई भी अंग अछूता नहीं था। उन्होंने 'बहरूपिया' और ''हिजड़ों'' के बारे में भी लिखा है। उस समय ये समाज का एक ऐसा अंग थे, जो अक्सर किसी भी शुभ अवसरों पर सरलता से देखे जा सकते थे। एक उदाहरण दृष्टव्य है–

''इसके अलावा कुछ अनाहूत अतिथि भी आधमकते। उनमें बहरूपिया प्रमुख होता। वह किसी भी आ धमकता। पुलिस अफसर के वेश में किसी कानून को तोड़ने का हवाला देकर वर पक्ष को डराता–धमकाता और तब उनमें घबराहट पैदा हो जाती, तो विनम्र होकर कहता 'मैं तो आपका सेवक बहरूपिया हूँ' निनयानवें कम सौ रूपये दो। यानि एक रूपया। और हिजड़ों का दल कभी आकर धमक सकता। जन्म के बाद (जो उन दिनों केवल बेटे के जन्म पर ही होता) विवाहों में मिलने वाला दान ही उनकी आजीविका थी।'' समाज में ऐसे ही छोटे–छोटे अनेक वर्ग होते थे, जो एक–दूसरे से पूरी तरह भिन्न होते हुए भी अभिन्न होते थे। भारतीय परिवार में, भारतीय समाज में माँ का स्थान सदैव सर्वोच्च रहा है। अपने निःस्वार्थ प्रेम और बलिदान के कारण, वह अपनी संतान के लिए सदैव ममतामयी, पूजनीय रहती है। वटुक जी माँ के निःस्वार्थ प्रेम को प्रकट करते हुए कहते हैं कि–

''यज्ञ, पूजा, हवन, तर्पण क्या करें?
जल तुम्हें गंगा का अर्पण क्या करें?
स्वयं थीं तुम होम आजीवन तपीं।
याद पावन तव, समर्पण क्या करें?
(माँ की याद में)''

प्रखर सामाजिक चेतना के कारण वटुक जी ने समाज के एक अन्य नए उभरते महत्वपूर्ण अंग 'समलैंगिकों' के विषय में भी लिखा है। यद्यपि भारत में इस प्रकार के संबंध उस समय पर्दे के पीछे ही रहते थे। परन्तु वटुक जी ने जिस कुशलता से भारतीय समाज का चित्रण किया है, उसी कुशलता से पश्चिमी समाज का भी चित्रण किया है। वहां इसे संवैधानिक स्वीकृति मिल चुकी थी। एक उदाहरण दृष्टव्य है–

''बीसवीं सदी के सातवे दशक तक ऐसे संबंध छिपा के रखे जाते थे। पर उस दशक की क्रांतियों में एक क्रांति यह भी थी कि रिश्ते को समाज की ही नहीं, कानून की स्वीकृति भी मिली। अमेरिका और यूरोप के कई देशों में समलैंगिक विवाहों को स्वीकृति कानूनन दी गई। यहां तक कि आज कई राज्यों के गवर्नर, विधायक, सांसद समलैंगिक हैं। वे गोद लेकर बच्चों के अभिभावक बनते हैं। जैसे कि विश्व

की सबसे छोटी प्रधानमंत्री, फिनलैंड देश की, ऐसी ही दम्पत्ति की संतान है, गोद ली हुई। एक बार मैं सान डियागो में सहलैंगिक महिलाओं की विशाल पार्टी में गया था। निश्चित ही वहां पुरूष मित्र भी थे उनकी पर मात्र मित्र के रूप में। वे सब प्रोफेशनल नारिया थीं, अपने विषयों की विशेषज्ञ, बौद्धिक विचार–विमर्श में निष्णात।''

इस प्रकार हम देखते है कि डॉ0 वेद प्रकाश वटुक ने अपनी प्रखर सामाजिक चेतना द्वारा न केवल भारतीय ग्रामीण समाज का अपितु नगरीय एवं महानगरीय समाज का भी भली–भांति चित्रण किया है। एक दीर्घ अवधि का समय पश्चिमी समाज में बिताने के कारण उन्होंने वहां के समाज को भी भली–भांति देखा और समझा था, इसलिए उसके भी अच्छे–बुरे सभी पक्षों की झलक वटुक जी के साहित्य में सरलता से देखी जा सकती है।

वटुक जी की सामाजिक चेतना न केवल समाज के वास्तविक वर्तमान यथार्थ रूप को सबके समक्ष प्रस्तुत करती है अपितु परिवर्तित होते हुए सामाजिक मूल्यों के भी सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पहलुओं पर दृष्टि डालती है। परिवर्तित हो रहे सामाजिक मूल्यों में से कुछ वर्तमान समाज की आवश्यकयता भी हैं, जिनका वटुक जी ने भी अपने साहित्य में समर्थन ही किया है, पर वहीं कुछ सामाजिक मूल्य ऐसे भी हैं, जिनके विघटन से समाज का पतन अवश्यंभावी है, उन मूल्यों के संरक्षण के लिए भी बटुक जी ने अपने साहित्य द्वारा पुरजोर प्रयास किया है।

संदर्भ

1. वटुक, वेद प्रकाश. (1983). 'हिंदी–हिंदी कितना पानी'. अलंकार प्रकाशनः 666, झील, दिल्ली–110051. पृष्ठ **13.**
2. वटुक, वेद प्रकाश. (2016). 'मेरी इसरायल डायरी और हो ची मिन्ह की कविताएँ'. शब्दालोक, सी–3/59, सादतपुर विस्तारः दिल्ली–90. पृष्ठ **29.**
3. वटुक, वेद प्रकाश. (2018). 'भटकाव ही पथ बन गये'. भारतीय साहित्य प्रकाशनः 57–ए, न्यू आर्य नगर, जेल रोड, मेरठ–250004. पृष्ठ **103–104.**
4. वटुक, वेद प्रकाश. (2010). 'आदमी आज भी समस्या है'. (गजल संग्रह). भा0सा0प्र0: न्यू आर्य नगर, जेल रोड, मेरठ–250004. पृष्ठ **57.**
5. वटुक, वेद प्रकाश. (2017). 'घृणा का ब्याज' (हाइकु संग्रह). निरुपमा प्रकाशनः 506/13, शास्त्री नगर, मेरठ (उ0प्र0). पृष्ठ **78.**
6. सिंह, सुमन. (2019). 'भारतेतर हिंदी साहित्यकार' (आत्मीय संवाद). सर्वभाषा ट्रस्टः नई दिल्ली. पृष्ठ **30–31.**
7. पाश, अवतार सिंह. (लेखन). वटुक, डॉ0 वेदप्रकाश. (अनुवार). सिंह, नवल. (संपादक). बिखरे हुए पन्ने'. अमृत बुक्सः अक्षरधाम, गुरु तेग बहादुर कालोनी, कैथल–136027 (हरियाणा). पृष्ठ **31.**
8. वटुक, वेद प्रकाश. (2005). 'इकत्तीस प्रेम कविताएँ'. 'अलंकार प्रकाशनः 3611, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110002. पृष्ठ **42.**